

रामचरितमानस के पात्रों का चरित्र-चित्रण: मनोवैज्ञानिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. मुनीश कुमार पाण्डेय

पीएच.डी. हिंदी

महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश)

Email: mkp3099@gmail.com

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस हिंदी साहित्य की ऐसी कालजयी कृति है जिसमें धार्मिक आस्था, भक्ति, दर्शन, नीति, लोकजीवन तथा मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। तुलसीदास ने रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसके पात्रों को विविध मानवीय भावनाओं, नैतिक द्वंद्वों और सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक के रूप में विकसित किया है। रामचरितमानस के राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, दशरथ, कैकेयी, रावण, विभीषण, शबरी तथा निषादराज आदि पात्र अपने-अपने स्तर पर मनुष्य के व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तुलसीदास की पात्र-सृष्टि का वैशिष्ट्य यह है कि आदर्श पात्रों के भीतर भी मानवीय संवेदना दिखाई देती है और नकारात्मक पात्रों के भीतर भी ज्ञान, क्षमता तथा अंतर्द्वंद्व के संकेत मिलते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का तीन प्रमुख दृष्टियों-मनोवैज्ञानिक, नैतिक और सांस्कृतिक-से विश्लेषण किया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से राम का कर्तव्यबोध, सीता की दृढ़ता, लक्ष्मण की संवेदनशीलता, भरत का त्याग, दशरथ का वात्सल्य, कैकेयी का मानसिक परिवर्तन और रावण का अहंकार महत्वपूर्ण हैं। नैतिक दृष्टि से सत्य, धर्म, त्याग, मर्यादा, सेवा, करुणा, भक्ति और न्याय जैसे मूल्यों का चरित्रों के माध्यम से निरूपण हुआ है। सांस्कृतिक दृष्टि से ये पात्र भारतीय परिवार-व्यवस्था, राजधर्म, लोकमंगल, भक्ति-संस्कृति, गुरु-शिष्य संबंध, स्त्री-पुरुष संबंध तथा सामाजिक समरसता की अवधारणाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार रामचरितमानस की पात्र-सृष्टि केवल अतीत का साहित्यिक आख्यान नहीं है, बल्कि मानव-व्यवहार और मूल्य-चेतना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

मुख्य शब्द : गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, धार्मिक आस्था, भक्ति, दर्शन, नीति, लोकजीवन मानवीय संवेदनाओं।

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी प्रमुख कृति रामचरितमानस भारतीय साहित्य और संस्कृति की उन महान रचनाओं में है जिसने धार्मिक आख्यान को लोकभाषा, लोकसंस्कृति और मानवीय जीवन-मूल्यों के साथ जोड़ा। रामचरितमानस मूलतः रामकथा का पुनर्सृजन है, किंतु तुलसीदास ने वाल्मीकि रामायण की कथा को अपने समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना से जोड़कर एक नवीन काव्यात्मक स्वरूप प्रदान किया। यह रचना अवधी भाषा में है और इसके माध्यम से रामकथा व्यापक जनसमुदाय तक पहुँची।

रामचरितमानस में कथा सात कांडों-“बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड” में विकसित होती है। इन कांडों में पात्रों का व्यक्तित्व घटनाओं के साथ क्रमशः विकसित होता है। राम का बालरूप से मर्यादा पुरुषोत्तम तक का विकास, सीता का राजमहल की राजकुमारी से वनवासी जीवन की संघर्षशील नारी तक का रूपांतरण, भरत का राजसत्ता के प्रति विराग, हनुमान का सेवा और

भक्ति में पूर्ण समर्पण तथा रावण का ज्ञान और शक्ति के बावजूद अहंकार के कारण पतन-ये सभी चरित्र-यात्राएँ मनुष्य के व्यक्तित्व के विविध पक्षों को उद्घाटित करती हैं।

आधुनिक आलोचना की दृष्टि से रामचरितमानस के पात्रों को केवल “अच्छे” और “बुरे” पात्रों में बाँटना पर्याप्त नहीं है। उनके भीतर कार्यरत मानसिक प्रेरणाओं, भावनात्मक संघर्षों, निर्णयों और नैतिक विकल्पों का अध्ययन आवश्यक है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से रामायण के पात्रों में कर्तव्यबोध, भावनात्मक नियंत्रण, लगाव, ईर्ष्या, अपराधबोध, अहंकार, आत्मसंयम, निष्ठा और मानसिक संघर्ष जैसे अनेक तत्व दिखाई देते हैं। समकालीन अध्ययनों में भी राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरत और रावण के व्यक्तित्व को कर्तव्य, भावनात्मक नियंत्रण, नैतिक विवेक, भक्ति, अहंकार और आंतरिक संघर्ष के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि उत्तर भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण पाठ है। विद्वानों ने इसे एक प्रकार के “सामाजिक-सांस्कृतिक कोड” के रूप में भी देखा है, जिसमें कर्तव्य, मर्यादा और सामाजिक आचरण के आदर्शों का निरूपण मिलता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का विश्लेषण करना।
2. पात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्पष्ट करना।
3. पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
4. पात्र-सृष्टि में निहित भारतीय सांस्कृतिक चेतना का विवेचन करना।
5. आदर्श एवं प्रतिकूल पात्रों के माध्यम से तुलसीदास की जीवन-दृष्टि को समझना।
6. रामचरितमानस के पात्रों की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करना।

3. शोध-विधि

प्रस्तुत शोध में मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध-विधि का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस को आधार बनाया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में तुलसी साहित्य, रामकथा, सांस्कृतिक अध्ययन और चरित्र-विश्लेषण से संबंधित आलोचनात्मक सामग्री का उपयोग किया गया है। पात्रों के अध्ययन के लिए तीन आधार निर्धारित किए गए हैं- मनोवैज्ञानिक, नैतिक और सांस्कृतिक।

4. राम का चरित्र-मर्यादा, कर्तव्य और भावनात्मक संयम

रामचरितमानस के केंद्रीय पात्र राम हैं। तुलसीदास ने उन्हें ईश्वर के साथ-साथ आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। राम के चरित्र की सबसे प्रमुख विशेषता मर्यादा है।

राम के चरित्र का मनोवैज्ञानिक आधार आत्मसंयम और कर्तव्यबोध है। पिता के वचन की रक्षा के लिए राजसुख त्यागकर वन जाने का उनका निर्णय इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। वे व्यक्तिगत इच्छा की अपेक्षा कर्तव्य को प्राथमिकता देते हैं।

राम का चरित्र इन पंक्तियों में स्पष्ट होता है-

रघुकुल रीति सदा चली आई।

प्राण जाए पर बचन न जाई।

यह कथन राम के नैतिक व्यक्तित्व का मूल आधार प्रस्तुत करता है। यहाँ 'वचन' केवल व्यक्तिगत प्रतिज्ञा नहीं, बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व का प्रतीक है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से राम का निर्णय भावनात्मक नियंत्रण का परिचायक है। वे जानते हैं कि वनवास उनके लिए कष्टकारी है, फिर भी वे अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को कर्तव्य पर हावी नहीं होने देते। आधुनिक दृष्टि से यह भावनात्मक परिपक्वता का उदाहरण माना जा सकता है।

राम के व्यक्तित्व का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष करुणा है। वे अपने विरोधियों तथा समाज के उपेक्षित वर्गों के प्रति भी संवेदनशील हैं। इसी कारण उनका चरित्र केवल राजधर्म तक सीमित नहीं रहता, बल्कि लोकधर्म से जुड़ जाता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से राम आदर्श पुत्र, भाई, पति, मित्र और राजा के रूप में भारतीय मानस में प्रतिष्ठित हुए। उनके चरित्र ने भारतीय सामाजिक जीवन में 'मर्यादा' को महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मूल्य बनाया।

5. सीता का चरित्र - प्रेम, धैर्य और मानसिक दृढ़ता

सीता रामचरितमानस की प्रमुख स्त्री-पात्र हैं। तुलसीदास ने उनके चरित्र में प्रेम, पतिव्रत, धैर्य, त्याग और मानसिक दृढ़ता का सुंदर समन्वय किया है। राम के वन जाने की सूचना मिलने पर सीता की मनःस्थिति अत्यंत मार्मिक है। वे राम से अलग रहने की कल्पना नहीं कर सकतीं-

चलन चहत बन जीवन नाथू

केहि सुकृती सन होइहि साथू॥

की तनु प्रान कि केवल प्राना॥

बिधि करतबु कछु जाइ न जाना॥

इन पंक्तियों में सीता की भावनात्मक स्थिति व्यक्त हुई है। उनके लिए राम से अलग रहना जीवन की सार्थकता को समाप्त करने जैसा है। यह केवल दाम्पत्य प्रेम नहीं बल्कि गहरे भावनात्मक जुड़ाव का संकेत है। इस प्रसंग में सीता का निर्णय उनके दृढ़ आत्मबल को भी दर्शाता है।

सीता के चरित्र का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी नैतिक स्थिति नहीं छोड़तीं। लंका में रावण के सामने उनकी दृढ़ता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रावण के भय और प्रलोभन के बावजूद वे उसके प्रस्ताव को अस्वीकार करती हैं-

तून धरि ओट कहति बैदेही।

सुमिरि अवधपति परम सनेही॥

यहाँ तिनके की ओट केवल बाहरी दूरी नहीं, बल्कि नैतिक दूरी का भी प्रतीक है। सीता रावण की शक्ति से भयभीत होकर आत्मसमर्पण नहीं करतीं। इस दृष्टि से उनका चरित्र मानसिक दृढ़ता और आत्मसम्मान का प्रतीक बन जाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सीता के भीतर प्रेम, विरह, भय, धैर्य और प्रतिरोध सभी भावनाएँ मौजूद हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से वे भारतीय नारी-आदर्श की महत्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं, हालांकि आधुनिक अध्ययन में उनके चरित्र को स्त्री की agency, निर्णय क्षमता और आत्मबल के संदर्भ में भी पढ़ा जा सकता है।

6. लक्ष्मण -भ्रातृ-प्रेम, सेवा और भावुकता

लक्ष्मण का चरित्र राम के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। वे राजसी सुख छोड़कर राम और सीता के साथ वन जाते हैं। उनके चरित्र में कर्तव्य, सेवा, वीरता और भावुकता का समन्वय है।

लक्ष्मण की भावुकता का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण सीता-हरण से पूर्व का प्रसंग है। सीता राम की पुकार सुनकर लक्ष्मण से राम की सहायता के लिए जाने को कहती हैं। लक्ष्मण पहले परिस्थिति को समझाते हैं-

भूकुटि बिलास सृष्टि लय होई।

सपनेहुँ संकट परइ कि सोई।

लक्ष्मण को विश्वास है कि राम जैसे शक्तिशाली व्यक्ति किसी संकट में नहीं पड़ सकते। लेकिन सीता के कठोर वचनों के कारण उनका मन विचलित हो जाता है-

मरम बचन जब सीता बोला।

हरि प्रेरित लछिमन मन डोला।

यहाँ लक्ष्मण के मन का द्वंद्व अत्यंत स्वाभाविक रूप में सामने आता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह प्रसंग लक्ष्मण की संवेदनशीलता और भावनात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। नैतिक दृष्टि से वे सेवा और भ्रातृ-निष्ठा के आदर्श हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से राम-लक्ष्मण का संबंध भारतीय परिवार-व्यवस्था में भाईचारे और त्याग का आदर्श प्रस्तुत करता है।

7. भरत -त्याग, भ्रातृ-प्रेम और सत्ता-विमुखता

भरत का चरित्र रामचरितमानस की सबसे महान नैतिक उपलब्धियों में से एक है। उन्हें राज्य मिल सकता था, लेकिन उन्होंने उसे अपना अधिकार नहीं माना। वे राम के वनवास को स्वीकार नहीं करते और उन्हें वापस लाने के लिए वन जाते हैं।

भरत के चरित्र का मनोवैज्ञानिक आधार राम के प्रति गहरा प्रेम और आत्मग्लानि है। वे स्वयं को राम के वनवास का अप्रत्यक्ष कारण मानते हैं। इस कारण उनके भीतर गहरा मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है।

भरत की राम के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव राम-भरत मिलन के प्रसंग में अत्यंत मार्मिक है। रामचरितमानस में उनके मिलन को विरह-दुःख के समाप्त होने से जोड़ा गया है-

भरतानुज लछिमन पुनि भेटे।

दुसह बिरह संभव दुख मेटा।

राम और भरत के संबंध में सत्ता से अधिक प्रेम और धर्म की प्रधानता दिखाई देती है।

भरत का सबसे बड़ा नैतिक गुण सत्ता का त्याग है। वे राम की चरण-पादुका को सिंहासन पर स्थापित करते हैं। यह प्रसंग भारतीय राजनीतिक-सांस्कृतिक चेतना में सत्ता को व्यक्तिगत स्वार्थ के बजाय नैतिक दायित्व मानने की अवधारणा को व्यक्त करता है।

भरत का चरित्र वर्तमान समय में भी नेतृत्व और सार्वजनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण संदेश देता है-अधिकार से अधिक उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण है।

8. हनुमान -भक्ति, बुद्धि और निष्काम सेवा

हनुमान रामचरितमानस के सबसे लोकप्रिय पात्रों में से एक हैं। उनका व्यक्तित्व शक्ति, बुद्धि, विनम्रता और भक्ति का अद्भुत समन्वय है।

हनुमान के चरित्र का मूल आधार राम के प्रति पूर्ण समर्पण है। वे अपने व्यक्तिगत गौरव के लिए नहीं बल्कि रामकार्य के लिए कार्य करते हैं। उनका व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है कि शक्ति का सर्वोच्च उपयोग लोकमंगल और सेवा में है।

हनुमान के लिए राम का कार्य ही जीवन का उद्देश्य है। सुंदरकांड में उनका व्यक्तित्व विशेष रूप से विकसित होता है। समुद्र-लांघन, लंका-प्रवेश, सीता की खोज तथा राम का संदेश पहुँचाना उनकी बुद्धि और साहस दोनों को प्रदर्शित करता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हनुमान आत्मविश्वासी हैं, लेकिन अहंकारी नहीं। उनके भीतर असाधारण क्षमता होने के बावजूद वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं।

नैतिक दृष्टि से वे निष्काम कर्म और सेवा के आदर्श हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से हनुमान भारतीय भक्ति-परंपरा में भक्त और भगवान के संबंध का अत्यंत प्रभावशाली प्रतीक बन गए हैं।

9. दशरथ-वात्सल्य, वचन और मानसिक संघर्ष

दशरथ का चरित्र अत्यंत मानवीय है। वे शक्तिशाली राजा होने के बावजूद पुत्र-वियोग के सामने असहाय हो जाते हैं।

उनके चरित्र में एक ओर राम के प्रति अत्यधिक वात्सल्य है और दूसरी ओर कैकेयी को दिए गए वचन का नैतिक बंधन। यही द्वंद्व उनके मानसिक पतन का कारण बनता है।

दशरथ का मनोवैज्ञानिक पक्ष इस तथ्य को सामने लाता है कि मनुष्य के लिए कभी-कभी दो नैतिक दायित्वों के बीच निर्णय लेना अत्यंत कठिन हो जाता है। दशरथ के लिए राम का प्रेम और वचनपालन दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन दोनों को एक साथ निभाना संभव नहीं होता।

नैतिक दृष्टि से उनका चरित्र वचन की शक्ति को स्थापित करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से वे भारतीय परिवार और राजधर्म के बीच उपस्थित तनाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

10. कैकेयी-मोह, असुरक्षा और मानसिक परिवर्तन

कैकेयी का चरित्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रारंभ में वे राम से स्नेह रखने वाली माता हैं, लेकिन मंथरा के प्रभाव के बाद उनके विचार बदल जाते हैं।

कैकेयी के मन में भरत के भविष्य को लेकर असुरक्षा और राजसत्ता को लेकर मोह उत्पन्न होता है। यही भावनाएँ उन्हें दशरथ से दो वरदान माँगने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनके चरित्र में यह परिवर्तन अचानक नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का परिणाम है। बाहरी प्रभाव, मातृ-मोह, भविष्य की चिंता और सत्ता की इच्छा मिलकर उनके निर्णय को प्रभावित करते हैं।

इस दृष्टि से कैकेयी का चरित्र मानवीय मन की दुर्बलताओं का अध्ययन प्रस्तुत करता है। नैतिक दृष्टि से उनका चरित्र मोह और स्वार्थ के परिणामों को दिखाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह राजपरिवार में सत्ता, परिवार और स्त्री की स्थिति से जुड़े प्रश्नों को सामने लाता है।

11. रावण-विद्वत्ता, शक्ति और अहंकार

रावण रामचरितमानस का प्रमुख प्रतिपक्षी पात्र है। उसके व्यक्तित्व में विद्वत्ता, शक्ति, तपस्या, राजसत्ता और अहंकार का जटिल मिश्रण है।

रावण का मनोवैज्ञानिक दोष उसका अहंकार है। वह अपनी शक्ति पर इतना विश्वास करता है कि उचित परामर्श को भी स्वीकार नहीं करता। उसके चरित्र में ज्ञान और विवेक का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

रावण के व्यक्तित्व का यह पक्ष इन पंक्तियों में दिखाई देता है-

सेन बिलोकि सहज अभिमानी।

बोला बचन क्रोध मद सानी।।

यहाँ “अभिमानी”, “क्रोध” और “मद” रावण के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के प्रमुख तत्व हैं।

सीता के सामने भी रावण की भाषा उसके अहंकार और अधिकार-बोध को व्यक्त करती है। वह अपनी शक्ति के बल पर सीता को प्रभावित करना चाहता है, लेकिन सीता उसकी शक्ति के सामने झुकती नहीं हैं।

रावण का चरित्र यह नैतिक संदेश देता है कि केवल ज्ञान, शक्ति और संपत्ति मनुष्य को महान नहीं बनाते। यदि उनमें विवेक और आत्मसंयम का अभाव हो तो वही शक्तियाँ विनाश का कारण बन सकती हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से रावण बुराई, अहंकार और अधर्म के प्रतीक के रूप में भारतीय लोक-स्मृति में स्थापित है। दशहरा और रामलीला में रावण-वध इसी सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता को जीवित रखता है।

12. विभीषण - नैतिक विवेक और सत्यनिष्ठा

विभीषण का चरित्र विशेष रूप से नैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वे रावण के भाई हैं, लेकिन उसके अधर्म का समर्थन नहीं करते। उनके भीतर एक ओर पारिवारिक संबंध है और दूसरी ओर धर्म तथा सत्य के प्रति निष्ठा। वे रावण को उचित मार्ग अपनाने की सलाह देते हैं, लेकिन जब रावण उनकी बात नहीं मानता तो विभीषण राम का पक्ष ग्रहण करते हैं। यह प्रसंग बताता है कि नैतिकता रक्त-संबंधों से ऊपर हो सकती है। अन्याय का समर्थन केवल इसलिए नहीं किया जा सकता कि अन्यायी व्यक्ति अपना संबंधी है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विभीषण का निर्णय नैतिक साहस का परिचायक है। सांस्कृतिक दृष्टि से वे भारतीय नीति-परंपरा में सत्य और धर्म के पक्षधर के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

13. शबरी और निषादराज - लोकमंगल एवं सामाजिक समरसता

रामचरितमानस में शबरी और निषादराज जैसे पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने भक्ति और मानवीय संबंधों की व्यापकता को प्रस्तुत किया है। शबरी की भक्ति सरल और निष्कपट है। उनका चरित्र यह संदेश देता है कि भक्ति के लिए सामाजिक प्रतिष्ठा या बाहरी वैभव आवश्यक नहीं है। उनके लिए राम के प्रति प्रेम ही जीवन का सर्वोच्च मूल्य है। इसी प्रकार निषादराज और राम का संबंध सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर मानवीय आत्मीयता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से इन पात्रों का महत्व इसलिए भी अधिक है कि रामचरितमानस केवल राजपरिवार की कथा नहीं रह जाती, बल्कि वनवासी, साधु, निषाद, वानर और सामान्य जन तक विस्तृत हो जाती है।

14. मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से रामचरितमानस के पात्रों में मानवीय भावनाओं की व्यापक अभिव्यक्ति मिलती है। राम में कर्तव्यबोध और आत्मसंयम, सीता में प्रेम और दृढ़ता, लक्ष्मण में भावुकता और निष्ठा, भरत में त्याग और आत्मग्लानि, दशरथ में वात्सल्य और असहायता, कैकेयी में मोह और असुरक्षा, हनुमान में आत्मविश्वास और समर्पण तथा रावण में अहंकार और सत्ता-बोध दिखाई देता है। सीता-हरण के प्रसंग में राम का मनोवैज्ञानिक रूप विशेष रूप से मानवीय हो जाता है। सीता के न मिलने पर वे व्याकुल होकर प्रकृति और जीव-जंतुओं से उनके बारे में पूछते हैं-

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी।

तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥

यहाँ राम का शोक और प्रेम अत्यंत मानवीय रूप में व्यक्त हुआ है।

इस प्रकार तुलसीदास के पात्र केवल आदर्शों की मूर्तियाँ नहीं हैं- वे सुख, दुःख, प्रेम, क्रोध, भय, मोह, शोक और आशा जैसी मानवीय भावनाओं से निर्मित जीवंत चरित्र हैं।

15. नैतिक परिप्रेक्ष्य

रामचरितमानस की पात्र-सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसका नैतिक आयाम है।

राम सत्य और मर्यादा के प्रतीक हैं। भरत त्याग और भ्रातृ-प्रेम के प्रतीक हैं। लक्ष्मण सेवा के आदर्श हैं। सीता निष्ठा और धैर्य की प्रतीक हैं। हनुमान निष्काम सेवा और भक्ति के प्रतीक हैं। विभीषण सत्य और विवेक के प्रतीक हैं। इसके विपरीत रावण अहंकार तथा अनियंत्रित इच्छा के दुष्परिणामों को प्रस्तुत करता है।

तुलसीदास ने नैतिक मूल्यों को केवल उपदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि पात्रों के जीवन में उन्हें क्रियाशील बनाया। यही कारण है कि रामचरितमानस का नैतिक संदेश पाठक के सामने अधिक प्रभावशाली ढंग से आता है।

राम का वनवास सत्य और कर्तव्य का उदाहरण है एवं भरत का त्याग सत्ता-विमुखता का, हनुमान की सेवा निष्काम कर्म का और रावण का पतन अहंकार के दुष्परिणाम का जीता जागता उदाहरण है।

16. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

रामचरितमानस भारतीय संस्कृति के निर्माण और संरक्षण में अत्यंत प्रभावशाली रहा है। इसके पात्र भारतीय परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और लोकजीवन के अनेक आदर्शों से जुड़े हुए हैं।

राम भारतीय सांस्कृतिक चेतना में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में स्थापित हैं। भरत त्याग के आदर्श हैं। सीता भारतीय स्त्री-चरित्र की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक हैं। हनुमान भक्ति और सेवा के प्रतीक हैं।

रामचरितमानस की सांस्कृतिक शक्ति उसके पाठ तक सीमित नहीं है। रामलीला, मानस-पाठ, कथा-प्रवचन और लोकगीतों के माध्यम से इसके पात्र पीढ़ी-दर-पीढ़ी जनजीवन का हिस्सा बने हैं।

इस दृष्टि से रामचरितमानस एक जीवित सांस्कृतिक परंपरा है, जिसमें साहित्य, धर्म, लोकनाट्य और सामाजिक जीवन परस्पर जुड़े हुए हैं।

17. पात्रों में आदर्श और मानवीयता का समन्वय

तुलसीदास की सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि यह है कि उन्होंने आदर्श पात्रों को भी मानवीय भावनाओं से जोड़ा है।

राम आदर्श हैं, लेकिन वे सीता-वियोग में रोते हैं। सीता आदर्श नारी हैं, लेकिन वे भय, प्रेम और पीड़ा का अनुभव करती हैं। लक्ष्मण वीर हैं, लेकिन कठोर शब्दों से प्रभावित होकर मानसिक रूप से विचलित होते हैं। भरत त्यागी हैं, लेकिन राम के वियोग में व्याकुल होते हैं। दशरथ राजा हैं, लेकिन पुत्र-वियोग में असहाय हो जाते हैं।

दूसरी ओर रावण केवल खलनायक नहीं है- उसमें महान विद्वत्ता और शक्ति भी है। उसकी त्रासदी यह है कि उसके गुण उसके अहंकार के कारण विनाशकारी हो जाते हैं।

इसीलिए रामचरितमानस के पात्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन जाते हैं। वे मानव व्यक्तित्व की जटिलताओं को प्रस्तुत करते हैं।

18. समकालीन संदर्भ में पात्रों की प्रासंगिकता

वर्तमान समाज में भी रामचरितमानस के पात्रों के मूल्य प्रासंगिक हैं। राम का चरित्र नैतिक नेतृत्व की प्रेरणा देता है। भरत सत्ता में त्याग और उत्तरदायित्व की भावना को स्थापित करते हैं। हनुमान सेवा, समर्पण और कार्यक्षमता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। विभीषण यह सिखाते हैं कि सत्य का पक्ष लेना संबंधों से ऊपर हो सकता है।

रावण का चरित्र आधुनिक जीवन के लिए विशेष चेतावनी देता है। आज ज्ञान, तकनीक, धन और शक्ति की उपलब्धता के बावजूद यदि आत्मसंयम और नैतिक विवेक का अभाव हो तो व्यक्ति और समाज दोनों संकट में पड़ सकते हैं।

सीता का चरित्र भी आधुनिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। उनकी दृढ़ता, संकट में धैर्य और नैतिक प्रतिबद्धता को स्त्री की मानसिक शक्ति के रूप में पढ़ा जा सकता है।

इस प्रकार रामचरितमानस के पात्र आधुनिक समाज में नेतृत्व, परिवार, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संबंधों पर विचार करने का अवसर प्रदान करते हैं।

19. निष्कर्ष

गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस की पात्र-सृष्टि हिंदी साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। तुलसीदास ने अपने पात्रों को केवल धार्मिक या पौराणिक चरित्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें मानव जीवन की मानसिक, नैतिक और सांस्कृतिक जटिलताओं का प्रतिनिधि बनाया। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, दशरथ, कैकेयी, हनुमान और रावण के चरित्र मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं को अभिव्यक्त करते हैं। राम का आत्मसंयम, सीता की मानसिक दृढ़ता, लक्ष्मण की भावुकता, भरत का आत्मत्याग, दशरथ का वात्सल्य, कैकेयी का मोह, हनुमान का आत्मविश्वास और रावण का अहंकार मानवीय मन के अलग-अलग आयाम हैं।

नैतिक दृष्टि से रामचरितमानस सत्य, धर्म, त्याग, सेवा, करुणा, निष्ठा और लोकमंगल की स्थापना करता है। राम और भरत जैसे पात्र सकारात्मक नैतिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जबकि रावण का चरित्र अहंकार और अनियंत्रित इच्छा के दुष्परिणामों को सामने रखता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से रामचरितमानस ने भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति और लोकजीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इसके पात्र रामलीला, कथा, पाठ और लोकपरंपराओं के माध्यम से आज भी जीवंत हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि रामचरितमानस के पात्र एक साथ मनोवैज्ञानिक, नैतिक और सांस्कृतिक प्रतीक हैं। यही बहुआयामी चरित्र-सृष्टि इस महाकाव्य को कालजयी बनाती है। तुलसीदास ने पात्रों के माध्यम से केवल रामकथा नहीं कही, बल्कि मनुष्य को उसके कर्तव्य, संबंध, भावनाओं और नैतिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया।

संदर्भ सूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी-श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र-गोस्वामी तुलसीदास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र-हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद-हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नगेन्द्र, डॉ.-तुलसीदास - संदर्भ और दृष्टि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. भट्टनागर, रामरतन-तुलसी साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
7. शर्मा, देवेन्द्रनाथ-तुलसी साहित्य - विवेचन और मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
8. सिंह, योगेन्द्र प्रताप-रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
9. मदान, इन्द्रनाथ (सम्पादक)-तुलसीदास - चिंतन और कला, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
10. उपाध्याय, मधुकर एवं कुमुद उपाध्याय (सम्पादक)-रामचरितमानस अवधी-हिंदी कोश, सेतु प्रकाशन समूह, नोएडा, 2024।

Cite the Article:

पाण्डेय, डॉ. मुनीश कुमार . (2026). रामचरितमानस के पात्रों का चरित्र-चित्रण: मनोवैज्ञानिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 38-45, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026. DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.04>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.